"बंजर धरती करे पुकार–पेड़ लगाकर करें श्रृंगार"

पंत प्रसार संदेश

वर्ष : 21, अंक : 1

(जनवरी–मार्च, 2026)

कुलपति संदेश

पर्वतीय क्षेत्रों में छोटे–छोटे एवं सीढ़ीनुमा बिखरे जोत, वर्षा आधारित खेती, जंगली जानवरों की बढ़ती समस्या, कृषि निवेशों के बढ़ते दाम प्रायः कृषकों को हतोत्साहित करती हैं। इन क्षेत्रों में आधुनिक उन्नत कृषि तकनीकें यथा कुक्कुट पालन, मौन पालन, दुग्ध उत्पादन, शीतोष्ण फलोत्पादन, सब्जी उत्पादन, औद्यानिकी एवं सगंध पौध उत्पादन, मोटे अनाजों का मूल्यवर्धन, मत्स्य पालन आदि प्रदेश के मध्यम एवं लघु कृषकों के लिए स्वरोजगार का मार्ग प्रशस्त कर सकती हैं। इन उत्पादों की गुणवत्तायुक्त पैकेजिंग व ब्राण्डिंग कृषक के आय में कई गुना वृद्धि कर सकते हैं। इन सभी तकनीकों के सजीव प्रदर्शन, कृषकों हेतु उन्नत बीज व अन्य कृषि निवशें की उपलब्धता कराने हेतु अभी मध्य मार्च में विश्वविद्यालय द्वारा विशाल किसान मेले का आयोजन किया गया। इस मेले में न केवल उत्तराखण्ड बल्कि देश के अलग–अलग हिस्सों से भारी संख्या में किसानों ने प्रतिभाग किया और विकसित तकनीकों के बारे में जाना, समझा। मेले से किसान साथी भारी मात्रा में पंतनगर बीज व अन्य निवेशों का क्रय करते देखे गये। इसी कड़ी में, श्री अन्न जो उत्तराखण्ड की धरोहर के रूप में विख्यात है, इनके मूल्यवर्धित उत्पाद जैसे मल्टीग्रेन आटा, बिस्किट, केक, लड्डू, सेवई, पापड़, नमकीन, पास्ता, मोमोज, पौष्टिक पेय पदार्थ आदि बनाये जा रहे हैं। विश्वविद्यालय की विभिन्न इकाईयाँ एवं कृषि विज्ञान केन्द्र उन्नत कृषि तकनीकों को दूरस्थ क्षेत्र के कृषकों तक पहुँचा कर उनके आजीविका सुधार हेतु अथक परिश्रम करते हैं। कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा प्राकृतिक खेती, जैविक खेती व अन्य अनेक आय वृद्धि जनित प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये जा रहे हैं। आज आवश्यकता है कि ऐसे कार्यक्रम जनपद के ज्यादा से ज्यादा ग्रामों में आयोजित किये जायें, जिसे युवा अपनाकर स्वावलम्बी और आत्मनिर्भर बनें और उनका पलायन भी रुके। मुझे यह बताते हुए हर्ष की अनुभूति हो रही है कि प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा ''पंत प्रसार संदेश'' पत्रिका का नियमित रूप से प्रकाशन किया जा रहा है और जनवरी–मार्च, 2026 का अंक आपके हाथों में है। इस पत्रिका में अनेक कृषकोपयोगी जानकारियाँ, आगामी त्रैमास के सम सामयिक कृषि कार्यक्रम आदि समावेशित होते हैं। मैं पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु डा. जितेन्द्र क्वात्रा, निदेशक प्रसार शिक्षा एवं डा. बी.डी. सिंह, प्राध्यापक, प्रसार शिक्षा निदेशालय को बधाई देता हूँ। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह पत्रिका रेखीय विभागों के प्रसार कार्यकर्ताओं के मार्गदर्शन एवं कृषकों हेतु स्वरोजगार की राह दिखाने में पथप्रदर्शक की भूमिका निभायेगी।

(डा० मनमोहन सिंह चौहान)
कुलपति

संदेश

हरित क्रान्ति के फलस्वरूप भारतवर्ष में कृषि क्षेत्र में महत्वपूर्ण प्रगति हुई है, जिसके परिणामस्वरूप खाद्यान्न उत्पादन में दोगुनी से अधिक वृद्धि हुई और देश खाद्यान्न में आत्मनिर्भर हुआ है। सीमान्त, लघु और विशेषकर उत्तराखण्ड के पर्वतीय क्षेत्र के कृषक इस विकास प्रक्रिया से भली भांति जुड़ नहीं पाते हैं। इस परिप्रेक्ष्य में यह आवश्यक हो जाता है कि इन कृषकों की आवश्यकतानुसार कृषि तकनीकें विकसित की जाएं। इसी के दृष्टिगत कृषि जनित सभी व्यवसायों में कुशल प्रबन्धन, समन्वित फसल प्रणाली, प्राकृतिक खेती, जैविक खेती तथा उन्नत बीजों एवं तकनीकों के समेकित प्रयोग पर बल दिये जाने की आवश्यकता है। उत्तराखण्ड के पर्वतीय क्षेत्रों में, जहाँ एक ओर जोत बिखरी एवं कृषि वर्षाश्रित है, वहीं दूसरी ओर यहाँ उन्नत कृषि तकनीकों का अभाव भी है। अतः यहाँ के कृषकों को आत्मनिर्भर बनाना अत्यधिक चुनौतीपूर्ण कार्य है। यह सर्वविदित है कि गोविन्द बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय एवं अधीनस्थ कृषि विज्ञान केन्द्रों के वैज्ञानिकों के अथक प्रयास द्वारा कृषकों की आजीविका में सुधार लाने हेतु सतत् प्रयत्नशील है, जो कि अत्यन्त सराहनीय है। मुझे यह जानकर अत्यन्त हर्ष है कि विश्वविद्यालय के प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा कृषकोपयोगी त्रैमासिक पत्रिका ''पंत प्रसार संदेश'' का प्रकाशन किया जा रहा है।

मुझे आशा ही नहीं, अपितु पूर्ण विश्वास है कि यह पत्रिका जहाँ एक ओर कृषि कार्य संचालन में प्रभावी भूमिका निभायेगी, वहीं दूसरी ओर कृषकों की आजीविका वृद्धि में भी सहायक सिद्ध होगी। पत्रिका के आगामी अंक जनवरी–मार्च, 2026 के सफल प्रकाशन हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

(प्रो० नवीन चन्द्र लोहनी)
कुलपति
उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी (नैनीताल)

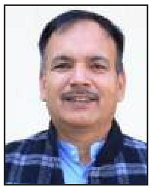

भारत एक कृषि प्रधान देश है, जहाँ लगभग 65 प्रतिशत आबादी गांवों में रहती है, जो अधिकांशतः कृषि पर निर्भर हैं। कृषक बन्धु सदियों से कृषि, उद्यान एवं कृषि के अन्य घटकों को अपनाकर कृषि विविधीकरण के विभिन्न आयामों को अपनाते हुए अपना जीविकोपार्जन करते आ रहे हैं। विशेषकर उत्तराखण्ड के पर्वतीय क्षेत्रों में फसल चक्र में दलहनी फसल का समावेश मील का पत्थर साबित हो सकता है। ये फसलें वायवीय नत्रजन स्थिरीकरण द्वारा पौधों को प्राकृतिक रूप से उर्वरक प्रदान करते हैं, जिससे इन्हें 'उर्वरक का खजाना' नाम भी दिया गया है। समस्त दलहनी फसलें प्रोटीन प्राप्ति का सुलभतम श्रोत के रूप में जानी जाती है। मैं कृषकों से अपील करूँगा कि वे न केवल खेती में बल्कि अपने भोजन में भी दलहनों का समावेश करें।

कृषि विश्वविद्यालयों एवं भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के विभिन्न संस्थानों द्वारा कृषि आधारित परीक्षणों एवं प्रदर्शनों का आयोजन किया जाता है। इनसे प्राप्त परिणामों के आधार पर कृषकोपयोगी तकनीकें विकसित की जाती हैं, जो कृषकों के आवश्यकता के अनुरूप एवं कम लागत की होती हैं। इन नवीनतम विकसित कृषि तकनीकों को सुदूर अंतिम पायदान पर बैठे कृषक तक ले जाकर कृषकों की आय में वृद्धि की जा सकती है। हमारे संस्थान द्वारा भी कृषकों के आजीविका संवर्धन तथा उत्थान सम्बन्धी अनेक कार्यक्रम चलाये जाते हैं। मैं इस पत्रिका के माध्यम से किसान साथियों से अपील करूँगा कि वे संस्थान में चली आ रही गतिविधियों से लाभान्वित सकते हैं। गोविन्द बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पंतनगर के मार्गदर्शन में विभिन्न जनपदों में स्थित कृषि विज्ञान केन्द्र पूरी लगन से तकनीक हस्तांतरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। मुझे यह जानकर हर्ष हुआ है कि प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा ''पंत प्रसार संदेश'' नामक त्रैमासिक पत्रिका प्रकाशित की जाती है। मुझे विश्वास है कि यह पत्रिका कृषकों एवं कृषि आधारित प्रसार कार्यकर्ताओं हेतु उपयोगी साबित होगी और कृषक बन्धुओं को समय–समय पर उचित जानकारी मिलती रहेगी।

(डा० आई०डी० भट्ट)
निदेशक
निदेशक, गो०ब० पंत राष्ट्रीय हिमालय पर्यावरण संस्थान, अल्मोड़ा

आगामी त्रैमास के कृषि कार्य : अप्रैल–जून

अप्रैल : मैदानी क्षेत्र–फसल

गेहूँ एवं जौ : फसल पकने पर यथासमय कटाई व गहाई कर लें।

चना, मटर, मसूर, उर्द एवं मूंग : चना, मटर एवं मसूर की तैयार फसल की कटाई कर लें। विलम्ब से बोयी गयी चने की फसल में फली छेदक कीट का प्रकोप होने पर संस्तुति अनुसार कीटनाशी रसायन का छिड़काव करें।

गन्ना : बसन्तकालीन गन्ने में आवश्यकतानुसार सिंचाई करें, तथा निराई–गुड़ाई कर खरपतवार निकाल लें। शरदकालीन गन्ने एवं पेड़ी फसल में आवश्यकतानुसार सिंचाई करें।

अप्रैल : पर्वतीय क्षेत्र–फसल

गेहूँ एवं जौ : घाटियों में बोयी गयी फसलों में आवश्यकतानुसार सिंचाई करें। तैयार फसल की कटाई कर लें। मध्य एवं ऊँचाई वाले क्षेत्रों में असिंचित फसल में 2 प्रतिशत यूरिया का घोल बनाकर पर्णीय छिड़काव करें।

धान : माह के प्रथम पखवाड़े तक चेतकी धान की बुवाई पूर्ण कर लें। पिछले माह बोयी गयी फसल में जमाव के 20–25 दिन बाद निराई–गुड़ाई कर खरपतवार निकाल लें।

अप्रैल : मैदानी क्षेत्र–सब्जी

टमाटर : फसल में आवश्यकतानुसार निराई–गुड़ाई व सिंचाई करें। फल छेदक कीट के नियंत्रण हेतु रसायन का प्रयोग करें।

लहसुन, पालक, मेथी, धनियाँ : लहसुन की खुदाई करें। तीन दिन तक खेत में ही रहने दें। बाद में छाया में सुखाने की व्यवस्था करें तथा भण्डारण करें।

भिण्डी, लोबिया, राजमा : तैयार फलियों को तोड़कर विपणन की व्यवस्था करें। यदि फसलें बीज वाली हैं तो तैयार फलियों को तोड़कर सुखायें व बीज निकालें।

अप्रैल : पर्वतीय क्षेत्र–सब्जी

आलू : फसल में आवश्यकतानुसार निराई–गुड़ाई व सिंचाई करें। झुलसा बीमारी से बचाव के लिये संस्तुत रसायन का छिड़काव करें।

टमाटर व बैंगन, शिमला मिर्च : फसल में आवश्यकतानुसार निराई–गुड़ाई व सिंचाई करें। घाटी में तैयार फलों को तोड़कर बाजार भेजें। झुलसा बीमारी के नियंत्रण हेतु संस्तुत रसायन का छिड़काव करें।

अप्रैल : मैदानी क्षेत्र–फल

आम : बाग की सिंचाई करें। आन्तरिक ऊतकक्षय रोग की रोकथाम के लिए बोरेक्स 0.8 प्रतिशत का छिड़काव करें। छोटी पत्ती रोग के नियंत्रण हेतु जिंक सल्फेट 0.5 प्रतिशत का छिड़काव करें।

लीची : बाग की 15 दिन के अन्तराल पर सिंचाई करें। छोटी पत्ती रोग के नियंत्रण हेतु जिंक सल्फेट 0.5 प्रतिशत का छिड़काव करें।

अप्रैल : पर्वतीय क्षेत्र–फल

सेब और नाशपाती : पौधशाला में जमे नए पौधों की सिंचाई करें। बाग में जिंक सल्फेट व बोरेक्स का छिड़काव करें। अधिक फले पेड़ों में फलों की छंटाई 25 प्रति नाली के हिसाब से करें।

आड़ू, खुबानी, आलूबुखारा, बादाम : जिंक सल्फेट और बोरेक्स का छिड़काव करें। बाग की चिड़ियों से रक्षा करें।

मई : मैदानी क्षेत्र–फसल

सूरजमुखी : फसल में दाना पड़ते समय सिंचाई करें। तोते आदि पक्षियों से परिपक्व फसल की सुरक्षा करें। फसल में बिहार बालदार सूँड़ी तथा जैसिड्स का प्रकोप होने पर संस्तुत कीटनाशी रसायनों का छिड़काव करें।

धान : मध्यम एवं देर से पकने वाली प्रजातियों की नर्सरी माह के अन्तिम सप्ताह में डाल दें। फसल से अच्छा उत्पादन लेने हेतु उन्नत प्रजातियों का चयन व संस्तुत सस्य क्रियायें अपनायें।

मई : पर्वतीय क्षेत्र–फसल

गेहूँ, जौ, सरसों, चना, मटर एवं मसूर : इन फसलों की समय पर कटाई कर लें एवं सूखने पर गहाई कर उपज को अच्छी तरह भण्डारित कर लें।

झंगोरा (मादिरा/साँवा) : अधिक उत्पादन लेने हेतु उन्नतशील प्रजातियों का चयन करें, जिनकी बुवाई ऊँचाई वाले क्षेत्रों में माह के प्रथम पखवाड़े तथा मध्यम व कम ऊँचाई वाले क्षेत्रों में माह के द्वितीय पखवाड़े में करें।

धान : मध्यम ऊँचे क्षेत्रों में सिंचित दशा (तलाऊँ) में रोपाई हेतु धान की नर्सरी माह के प्रथम पखवाड़े एवं घाटियों व कम ऊँचे क्षेत्रों में माह के द्वितीय पखवाड़े में रखें।

मई : मैदानी क्षेत्र–सब्जी

फूल गोभी, पात गोभी, गांठ गोभी, मूली, गाजर व शलजम : बीज वाली फसलों के कटाई का काम पूरा करें। बीज की सफाई करें और इतना सुखाये की नमी 8 प्रतिशत से ज्यादा न हो।

प्याज : यदि आवश्यक हो तो एक हल्की सी सिंचाई करें। आखिरी सप्ताह में पत्तियों को जमीन की सतह से झुका दे इससे गांठे सख्त हो जाती है।

लहसुन : अतिशीघ्र खुदाई करें। दो दिन तक खेत में सूखने दें बाद में छोटे–छोटे बण्डल बनाकर नमी रहित स्थान पर 10 दिन तक सुखायें तथा भण्डारण करें।

मई : पर्वतीय क्षेत्र–सब्जी

आलू : फसल में आवश्यकतानुसार निराई–गुड़ाई व सिंचाई करें। झुलसा रोग के लक्षण दिखें तो संस्तुत रसायन का छिड़काव करें। फसल कमजोर दिखाई दे तो 50 कि.ग्रा./है. यूरिया खड़ी फसल में डालें।

टमाटर व बैंगन : तैयार फलों की तुड़ाई कर बाजार भेजने की व्यवस्था करें। फसल में आवश्यकतानुसार निराई–गुड़ाई व सिंचाई करें।

मई : मैदानी क्षेत्र–फल

आम : नए बाग लगाने के लिये रेखांकन करके गड्ढे खोदें व बोरेक्स का छिड़काव करें।

केला : सप्ताह के अंतराल पर सिंचाई करें। अंवाछित पत्तियों को निकालें, नये बाग लगाने के लिए गड्ढ़े खोदे।

नीबूवर्गीय फल : नये बाग लगाने के लिए रेखांकन करके गड्ढ़े खोद लें। बाग में 15 दिन के अंतराल पर सिंचाई करें।

मई : पर्वतीय क्षेत्र–फल

सेब : जिन स्थानों पर सिंचाई की सुविधा हो, उन बागों की सिंचाई करें। पत्ती खाने वाले कीट के नियंत्रण हेतु रसायन का छिड़काव करें।

आड़ू व खुबानी : फलों की चिड़ियाँ व अन्य जंगली जानवरों से रक्षा करें। अगेती किस्मों के फलों को तोड़कर बाजार भेजें।

जून : मैदानी क्षेत्र–फसल

धान : मध्यम षीघ्र एवं षीघ्र पकने वाली प्रजातियों की नर्सरी माह के प्रथम पखवाड़े एवं सुगन्धित धान की दूसरे पखवाड़े में डालें। उचित सस्य क्रियायें अपनाकर स्वस्थ नर्सरी तैयार करें एवं पौध 21–25 दिन की होने पर रोपाई कर लें।

मक्का : फसल की बुवाई माह के प्रथम पखवाड़े में कर लें। बुवाई हेतु उपयुक्त संकर/संकुल प्रजातियों का चयन, बीज की मात्रा, बीजोपचार, बुवाई की विधि, उर्वरकों व खरपतवारनाशी रसायन का प्रयोग तथा अन्य सस्य क्रियायें संस्तुति के अनुसार करें।

जून : पर्वतीय क्षेत्र–फसल

मंडुवा, काकुन (कौणी) व रामदाना (चुआ/चौलाई/मारसा) : मध्यम एवं कम ऊँचाई वाले क्षेत्रों में इन फसलों की बुवाई प्रथम पखवाड़े में करें। अधिक उत्पादन हेतु संस्तुत प्रजातियों का प्रयोग करें। गत

माह में बोयी गयी फसलों में विरलीकरण, निराई–गुड़ाई, खरपतवारनाशी रसायनों का प्रयोग एवं वर्षा के पश्चात् नत्रजन की टॉप–ड्रेसिंग संस्तुति अनुसार करें।

सोयाबीन : मध्यम एवं कम ऊँचाई वाले क्षेत्रों में फसल की बुवाई माह के प्रथम पखवाड़े में करें।

धान : जेठी धान की बुवाई प्रथम सप्ताह तक कर लें। प्रजाति का चुनाव, बीज की मात्रा, बीजोपचार, बुवाई, उर्वरकों का प्रयोग व अन्य सस्य क्रियायें संस्तुति अनुसार करें।

जून : मैदानी क्षेत्र–सब्जी

बैंगन : फसल से तैयार फलों को तोड़कर बाजार भेजें। बीज वाली फसल से बीज निकालें। जुलाई–अगस्त में रोपाई हेतु पौधशाला में बीज 1000–1200 ग्राम/है. की दर से डालें।

भिण्डी, लोबिया तथा राजमा : भिण्डी के तैयार फलों को तोड़कर बाजार भेजें। मई माह में बुवाई की गयी भिण्डी, लोबिया व राजमा में आवश्यकतानुसार निराई–गुड़ाई व सिंचाई करें।

मिर्च : आवश्यकतानुसार निराई–गुड़ाई करें। पकी हुई मिर्च को तोड़कर सुखायें तथा बीज निकालें। वर्षा ऋतु की फसल के लिए 1000–1500 ग्राम बीज/है. की दर से पौधशाला तैयार करें।

जून : पर्वतीय क्षेत्र–सब्जी

आलू : फसल में आवश्यकतानुसार निराई–गुड़ाई करें। झुलसा के नियंत्रण हेतु संस्तुत रसायन का छिड़काव करें। फसल में 50 किलोग्राम यूरिया/है. डालें।

टमाटर, बैंगन, मिर्च, शिमला मिर्च, फ्रासबीन, भिण्डी, लोबिया : फसल में आवश्यकतानुसार निराई–गुड़ाई व सिंचाई करें। कीट रोग दिखते ही संस्तुत रसायन का छिड़काव करें।

जून : मैदानी क्षेत्र–फल

आम : बाग की सफाई करें। नए बाग लगाने के लिए गड्ढ़ों की भराई का कार्य पूर्ण करें। मध्यम समय में परिपक्व होने वाली किस्मों को तोड़कर बाजार भेजें। पौधशाला में कलम बांधे एवं इसके लिए चीरा अथवा स्फान कलम विधि का प्रयोग करें।

नीबूवर्गीय फल : नए बाग लगाने के लिए गड्ढ़ों की भराई करें। जल निकास की नालियों की सफाई करें। फलदार पेड़ों में नत्रजन व पोटाश की दूसरी मात्रा का प्रयोग करें।

जून : पर्वतीय क्षेत्र–फल

सेब, नाशपाती, आड़ू, आलूबुखारा, खुबानी : बाग में जल निकास की व्यवस्था करें। बाग में जल निकास की नालियाँ बना लें। तैयार फलों की समय पर तुड़ाई कर विपणन करें।

अखिल भारतीय किसान मेला एवं कृषि उद्योग प्रदर्शनी का सफल आयोजन

विश्वविद्यालय द्वारा 119वाँ अखिल भारतीय किसान मेला का आयोजन मार्च 13–16, 2026 को किया गया। मेले के उद्घाटन अवसर पर मा. मुख्यमंत्री, उत्तराखण्ड, श्री पुष्कर सिंह धामी जी ने कहा कि निश्चित रूप से यह मेला कृषकों के आजीविका संवर्धन में मील का पत्थर साबित होगा और किसान विश्वविद्यालय द्वारा विकसित नवीनतम कृषि तकनीक को अपनाते हुए तकनीक हस्तान्तरण में महती भूमिका निभायेगें। कृषको, वैज्ञानिकों व कृषि निवेश फर्मों को एक मंच प्रदान करने वाला यह मेला निश्चित तौर पर 'कृषि कुम्भ' उपाधि हेतु सर्वोपयुक्त है। कुलपति, डा. मनमोहन सिंह चौहान ने विशेषकर, विश्वविद्यालय की प्रमुख उपलब्धियों और कृषकोपयोगी विकसित तकनीक के बारे में जानकारी चर्चा की। मुख्य अतिथि द्वारा उन्नत खेती करने के साथ–साथ कृषकों को इन विधाओं से जोड़ने के उपलक्ष में राज्य के नौ प्रगतिशील कृषकों और दो कृषि आधारित उद्यमियों को प्रतीक चिन्ह एवं प्रमाण–पत्र देकर सम्मानित किया गया। मेले में अनुसंधान केन्द्रों द्वारा नवीनतम प्रजातियों के बीज, शाक–भाजी एवं फलों के उन्नत बीजों व पौधों की बिक्री, किसानोपयोगी उन्नत तकनीकों की प्रदर्शनी आदि का आयोजन किया गया। समापन अवसर पर मुख्य अतिथि, मा. पूर्व मुख्यमंत्री उत्तराखण्ड एवं मा. पूर्व राज्यपाल, महाराष्ट्र, श्री भगत सिंह कोष्यारी ने कहा कि पंत विश्वविद्यालय प्रदेश की विशेषताओं एवं आवश्यकताओं के अनुरूप शोध, शिक्षण एवं प्रसार करते हुए उत्तराखण्ड के किसानों, विशेषकर पर्वतीय क्षेत्र के किसानों की आय में वृद्धि कर उन्हें कृषि से जोड़े रखने व पलायन रोकने में अपनी सक्रिय भूमिका निभा रहा है।

मेले के उद्घाटन के अवसर पर मा. मुख्यमंत्री, उत्तराखण्ड

कृषि विज्ञान केन्द्रों की गतिविधियाँ

कृषि विज्ञान केन्द्र, मटेला (अल्मोड़ा)

- केन्द्र द्वारा 41.60 है0 क्षेत्रफल पर 155 कृषकों के खेत पर अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन एवं अनुकरणीय प्रदर्शन का आयोजन किया जा रहा है। क्षमता विकास हेतु नौ प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया गया, जिसमें 190 प्रशिक्षणर्थीयों द्वारा प्रतिभाग किया गया।
- रेखीय विभागों द्वारा आयोजित कार्यक्रमों में केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा व्याख्यान दिये गये, जिसमे 189 कृषकों द्वारा प्रतिभाग किया गया। वैज्ञानिकों द्वारा 29 कृषकों के प्रक्षेत्र पर भ्रमण कर कृषकों के समस्याओं का समाधान किया गया।

शिव वृक्ष मित्र कार्यक्रम का आयोजन

- दिनांक 05.03.2026 को केन्द्र द्वारा भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान नई दिल्ली द्वारा आयोजित हरित आन्दोलन के उपलक्ष्य में शिव वृक्ष मित्र कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसके अन्तर्गत कृषक प्रक्षेत्रों एवं के.वी.के. प्रक्षेत्र पर फल वृक्षों का रोपण किया गया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, ग्वालदम (चमोली)

- पीएम श्री राजकीय इण्टर कालेज, देवाल (चमोली) के छात्रों का केन्द्र पर दिनांक 07.02.2026 को शैक्षणिक भ्रमण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में छात्रों को कृषि, सब्जी उत्पादन, फसलों के कीट–रोग, पशुपालन की विस्तृत जानकारी दी गयी एवं विभिन्न प्रदर्शन इकाईयों का भ्रमण कराया गया। वैज्ञानिकों द्वारा अटल उत्कृष्ट राजकीय इण्टर कालेज, देवाल का भ्रमण कर छात्रों को पर्वतीय क्षेत्रों मे मशरूम उत्पादन व पारम्परिक व मोटे अनाजों के बारे में जानकारी उपलब्ध करायी गयी।

नई दिल्ली कार्यशाला में सम्मानित होती वैज्ञानिक

- उद्यान विभाग, चमोली के सहयोग से दिनांक 20.03.2026 को विभागीय अधिकारियों/कर्मचारियों हेतु सब्जी उत्पादन की उन्नत तकनीकी, सब्जियों के प्रमुख कीट–रोगों की पहचान व प्रबन्धन, सब्जी पौधशाला प्रबन्धन व पॉलीहाउस प्रबन्धन पर प्रशिक्षण का आयोजन किया गया।
- राष्ट्रीय कृषि विज्ञान परिसर, नई दिल्ली में दिनांक 12–14.03. 2026 को Global Conference for Women in Agri-food systems विषय पर कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में केन्द्र से डा. दीप्ति कोठारी, विषय वस्तु विशेषज्ञ–गृह विज्ञान द्वारा प्रतिभाग कर Gender Dynamics in policy and market access थीम पर Oral Presentation प्रस्तुत किया, जिसके लिए इन्हें Best Oral Presentation Award प्रदान किया गया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, लोहाघाट (चम्पावत)

- केन्द्र द्वारा वर्मी कम्पोस्ट, तिलहन उत्पादन आदि पर 05 प्रशिक्षणों का आयोजन किया गया, जिसमें कुल 120 कृषकों ने प्रतिभाग किया।
- ऑन फार्म ट्रायल के अन्तर्गत एक ओ.एफ.टी., तीन प्रक्षेत्र दिवस, 10 कृषक गोष्ठी, 2 कृषक वैज्ञानिक संवाद का आयोजन किया गया, जिसमें भारी संख्या में कृषकों ने प्रतिभाग किया।
- कृषकों को करेला, कद्दू, पत्ता गोभी, खीरा, स्ट्राबेरी के उन्नत पौध उपलब्ध कराये गये।

पॉली हाउस में सब्जी पौध उत्पादन से आर्थिक सशक्तिकरण

- वैज्ञानिक सलाहकार समिति की 29 वीं बैठक दिनांक 21.01.2026 को मा. कुलपति, डा. मनमोहन सिंह चौहान, गो.बं. पं. कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पंतनगर की अध्यक्षता में हुई। इस बैठक में निदेशक प्रसार शिक्षा, डा. जितेन्द्र क्वात्रा, विश्वविद्यालय के वरिष्ठ वैज्ञानिकगण के साथ–साथ जनपद के रेखीय विभागों के अधिकारियों व समिति के माननीय सदस्यों ने भाग लिया। बैठक के दौरान गत वर्ष की प्रगति एवं आगामी कार्ययोजना के बारे में विस्तार से चर्चा हुआ।
- पन्तनगर में आयोजित अखिल भारतीय किसान मेला एवं कृषि उद्योग प्रदर्शनी दिनांक 13–16.03.2026 में केन्द्र द्वारा विकसित तकनीकों का प्रदर्शन स्टाल लगा कर किया गया। इसके साथ–साथ राज्य सरकार द्वारा आयोजित सरस मेला, टनकपुर में स्टाल लगाकर प्रतिभाग किया गया।
- केन्द्र पर कृषकों के तीन समूह तथा दो स्कूल के छात्र–छात्राओं व शिक्षकों द्वारा केन्द्र का भ्रमण किया गया। प्रतिभागियों ने केन्द्र पर प्रदर्शित विभिन्न तकनीकियों की जानकारी ली।
- उक्त अवधि में केन्द्र वैज्ञानिकों द्वारा विभिन्न कार्यक्रयों में 08 तकनीकी व्याख्यान दिये जिसमें लगभग 392 कृषक/कृषक महिलाओं ने लाभ उठाया। इसके साथ–साथ विभिन्न विषयों पर 895 विकसित प्रसार साहित्य कृषकों को वितरित किया गया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, ढकरानी (देहरादून)

- केंद्र द्वारा अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन के अन्तर्गत गेहूँ में 10 है0 में 25, तिलहन फसलों में 20 है0 में 36, गेहूँ हाइब्रिड में 4 है0 में 10 प्रदर्शन एवं शाकनाशी के प्रयोग में 4 है0 में 10 प्रदर्शन, अदरक में 0.8 है0 में 40 प्रदर्शन तथा प्याज में 0.15 है0 में 10 प्रदर्शन का आयोजन किया गया। गृह विज्ञान के अन्तर्गत 25 न्यूट्री गार्डन के प्रदर्शन आयोजित कराये गए। इसी प्रकार, आन फार्म ट्रायल के अन्तर्गत, अदरक के 4 परीक्षण, सब्जी मटर व लहसुन के 9 परीक्षण, फूलगोभी के 5 परीक्षण तथा मल्टीकट ज्वार के 10 परीक्षण लगाये गये।
- केन्द्र द्वारा कुल 09 प्रशिक्षण आयोजित कराते हुए कुल 215 कृषकों तथा कृषक महिलाओं को लाभान्वित किया गया।
- केन्द्र की वैज्ञानिक डॉ. बिजेता को भा.कृ.अ.प. स्थापना दिवस के अवसर पर आईसीएआर–अटारी, लुधियाना द्वारा युवा वैज्ञानिक पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। प्रगतिशील महिला कृषक डॉ. हिरेशा वर्मा, HAN एग्रोकेयर एंटरप्राइज की संस्थापक एवं सीईओ को उनके उद्यमिता के क्षेत्र में योगदान के आधार पर शीर्ष उद्यमी के रूप में चुना गया है। उन्हें 24 मार्च, 2026 को नई दिल्ली में "We Rise" कार्यक्रम के तहत उनके उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए सम्मानित किया गया। डॉ. हिरेशा वर्मा को टाइम्स वुमन एमिनेंस–2026 द्वारा भी उनकी उत्कृष्ट उपलब्धि के लिए उत्तर प्रदेश की मा. राज्यपाल श्रीमती आनंदीबेन पटेल द्वारा सम्मानित किया गया है। भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली द्वारा प्रगतिशील महिला कृषक डॉ0 पूजा गौड, ग्राम–फैडिज, चकराता, देहरादून को उनके विशिष्ट नवाचारों हेतु नवोन्मेशी किसान–2026 से सम्मानित किया गया। डॉ0 पूजा गौड को पंतनगर विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित अखिल भारतीय किसान मेला एवं कृषि उद्योग प्रदर्शनी मार्च 13–16, 2026 में 'प्रगतिशील कृषक सम्मान' से भी सुशोभित किया गया। इसी मेले में श्री कृष्णकांत, ग्राम–माजरी ग्रान्ट, डोईवाला, देहरादून को पशुपालन में उनके उल्लेखनीय कार्यों हेतु 'उन्नत उद्यमी सम्मान' से सुशोभित किया गया।
- बसंतोत्सव 2026 कार्यक्रम (27 फरवरी से 1 मार्च 2026) लोक भवन देहरादून में केंद्र का स्टाल लगाकर विभागीय गतिविधियों को प्रदर्शित किया गया। इस कार्यक्रम का उद्घाटन मा. राज्यपाल उत्तराखण्ड ले. ज. (से.नि.) श्री गुरमीत सिंह जी द्वारा किया गया। इसी प्रकार, राष्ट्रीय कृषि महोत्सव का आयोजन देव भूमि उत्तराखण्ड विश्वविद्यालय, देहरादून में फरवरी 23–24, 2026 को आयोजित हुआ। इसमें भी केंद्र का स्टाल लगाया गया।
- कृषि खाद्य प्रणालियों में महिलाओं पर वैश्विक सम्मेलन, नई दिल्ली मार्च 12–14, 2026 में केंद्र द्वारा प्रतिभाग किया गया।
- केन्द्र की वैज्ञानिक सलाहकार समिति की 21 वीं बैठक दिनांक 17.02.2026 को आयोजित की गई। बैठक में केंद्र द्वारा गत वर्ष में किए गए कार्यों का प्रस्तुतीकरण प्रभारी अधिकारी, डा. ए.के. शर्मा द्वारा किया गया तथा आगामी वर्ष की कार्ययोजना पर विस्तृत चर्चा की गई। बैठक की अध्यक्षता गोविंद बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पंतनगर के मा. कुलपति, डॉ. मनमोहन सिंह चौहान द्वारा की गयी। उक्त बैठक में डॉ. जितेंद्र क्वात्रा, निदेशक प्रसार शिक्षा, पंतनगर, डॉ. एम मधु, निदेशक, मृदा एवं जल संरक्षण संस्थान, देहरादून मत्स्य निदेशक, डॉ. रजनीश पांडे सहित अनेक रेखीय विभाग के अधिकारी व पंतनगर के वैज्ञानिक उपस्थित थे।

वैज्ञानिक सलाहकार समिति की बैठक का आयोजन

- कृषि विज्ञान केंद्र, देहरादून और श्री गुरू राम राय विश्वविद्यालय,

देहरादून के बीच बीज उत्पादन और अकादमिक आदान–प्रदान पर पूर्व समझौते को जारी रखने के लिए एक MoU पर हस्ताक्षर किए गए।

- केन्द्र के सहयोग से देहरादून जिले के किसानों ने पौध विविधता संरक्षण एवं किसान अधिकार प्राधिकरण (PPV&FRA) के अंतर्गत अखरोट की तीन किस्में क्रमशः जौनसारी खोड, जौनसारी जलवा अखरोट, गोपू जौनसारी अखरोट का पंजीकरण कराया है।

कृषि विज्ञान केन्द्र, धनौरी (हरिद्वार)

- ऑन फार्म ट्रायल के अन्तर्गत गन्ने में नए खरपतवारनाशकों की प्रभावशीलता का आंकलन, महिलाओं (15–20 वर्ष) की पोषण स्थिति में सुधार लाने के लिए पोषक तत्वों का मूल्यांकन, गेहूं में खरपतवारनाशकों की प्रभावशीलता का आकलन, जैविक खेती में उपयोग होने वाली सामग्रियों का मृदा उर्वरता और गेहूं की उत्पादकता पर प्रभाव का आकलन, गेहूं की बुवाई के लिए हैप्पी सीडर का मूल्यांकन, पशुओं में पुनः प्रजनन की समस्या आदि पर परीक्षण आयोजित किए गए। अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन के अंतर्गत गेहूं, उर्द, मसूर, सरसों, संकर गायों में अंतर एवं बाहरी परजीवियों के नियंत्रण हेतु प्रबंधन तथा बकरियों के आवास में उचित निस संक्रमण के उपयोग पर प्रदर्शन लगाए गए। वैज्ञानिकों द्वारा किसानों के प्रक्षेत्र पर 93 भ्रमण कर 251 किसानों से संपर्क किया गया।
- मा. प्रधानमंत्री के मन की बात, कृषि चौपाल कार्यक्रम तथा किसान सम्मान निधि कार्यक्रमों को सीधे प्रसारण के माध्यम से किसानों को दिखाया गया। केंद्र द्वारा दो किसान मेले में प्रतिभाग किया गया। केन्द्र द्वारा 20–22 फरवरी 2026 तक कोटद्वार, में आयोजित भारत उदय एक्सपो 2026, विकसित भारत @ 2047 कार्यक्रम में प्रतिभाग किया। इस कार्यक्रम में प्रसार शिक्षा निदेशालय, पंतनगर द्वारा भी सहभागिता की गयी।

कृषि में ड्रोन का बढ़ता उपयोग

- 21वीं वैज्ञानिक सलाहकार समिति की बैठक दिनांक 16.02.2026 को आयोजित की गयी। बैठक में गत वर्ष की प्रगति आख्या तथा आगामी वर्ष की कार्ययोजना पर गहन मंथन हुआ। कार्यक्रम में निदेशक प्रसार शिक्षा, डा. जितेन्द्र क्वात्रा, पंतनगर के वैज्ञानिकगण सहित जनपद के विभिन्न रेखीय विभाग के अधिकारियों ने भाग लिया।
- माननीय कुलपति डा0 मननोहन सिहं चौहान द्वारा दिनांक 18.03. 2026 को केन्द्र पर भ्रमण कर विभिन्न प्रसार गतिविधियों का अनुश्रवण किया गया। साथ ही आवश्यक दिशा–निर्देश भी दिये गये।

कृषि विज्ञान केन्द्र, ज्योलीकोट (नैनीताल)

- प्रथम पंक्ति प्रदर्शन के अन्तर्गत तिलहन फसल सरसों (पी0टी0–508 एवं पंत स्वेता) का 05 हैक्टेयर में 27 प्रदर्शन लगाये गये। गृह वाटिका के अन्तर्गत 50 महिला कृषकों को रबी मौसम की सब्जियों के बीज, पौध एवं वर्मी कम्पोस्ट खाद बनाने के लिये 20 महिलाओं को जय गोपाल कैंचुवे दिये गये।
- प्रक्षेत्र पर परीक्षण कार्यकम के अन्तर्गत फसल गेहूँ में पोटैशियम नाइट्रेट के पर्णीय अनुप्रयोग के माध्यम से गर्मी तनाव का प्रबन्धन करने हेतु कृषकों के प्रक्षेत्र पर परीक्षण किया गया। दैनिक आहार में प्रोटीन एवं आयरन युक्त खाद्य पदार्थो के उपयोग को बढ़ावा देने के लिये गृह विज्ञान विषय के अन्तर्गत 10 किशोरियों (16 से 18 वर्ष) को 50 ग्राम भुना सोयाबीन व 100 ग्राम पोहा (प्रति व्यक्ति प्रतिदिन) की दर से 90 दिन का आहार दिया गया। प्रति माह किशोरियों का बी0एम0आई0 का आंकलन भी किया गया।
- प्रशिक्षण कार्यक्रमों के अन्तर्गत कृषक एवं महिला कृषकों के लिये कुल 16 प्रशिक्षण कार्यक्रमों द्वारा 286 कृषकों को प्राकृतिक खेती, सस्य क्रियाएं, पशुपालन, मछली पालन एवं गृह विज्ञान सम्बन्धी जानकारी दी गयी। महिलाओं के मांग पर उन्हें मोमबत्ती बनाने, एपण कला एवं हर्बल गुलाल बनाने का प्रशिक्षण दिया गया।
- आर्या परियोजना के अन्तर्गत 25 कृषकों को कड़कनाथ बैकयार्ड पोल्ट्री में 20 चूजे एवं इकाई स्थापित करने के लिये प्रशिक्षण दिया गया। मशरूम उत्पादन पर प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन तथा मशरूम उत्पादन शुरू करने के लिये बैग तैयार कर वितरित किये गये।
- राष्ट्रीय प्राकृतिक खेती मिशन परियोजना के अन्तर्गत दो जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किये गये एवं जीवामृत, घनजीवामृत, कुनाबजल एवं अग्नियास्त्र बनाने को प्रशिक्षण एवं प्रयोग विधि के बारे में बताया गया।
- वैज्ञानिक सलाहकार समिति की बैठक दिनांक 30.01.2026 को डा. मनमोहन सिंह चौहान, कुलपति, गो. ब. पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पंतनगर की अध्यक्षता में केन्द्र पर आहूत हुई, जिसमें वर्ष 2025 की प्रगति आख्या एवं वर्ष 2026 की कार्य योजना प्रस्तुत की गयी। इस कार्यक्रम में निदेशक प्रसार शिक्षा, डा. जितेन्द्र क्वात्रा सहित रेखीय विभाग के अधिकारियों द्वारा भाग लिया गया।
- मुख्य दिवस का आयोजन– गणतंत्र दिवस, मतदाता दिवस, महिला दिवस एवं भारत विस्तार कार्यक्रम आयोजित किया गया। उत्तराखण्ड रजत जयंती स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में केन्द्र द्वारा आम्रपाली संस्थान हल्द्वानी में 18–20 फरवरी 2026 को प्रतिभाग किया गया।

मशरूम प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन

- प्रसार कार्यक्रम– दो कृषक वैज्ञानिक संवाद, महिला स्वयं सहायता समूह की मासिक बैठकों के अन्तर्गत सदस्याओं को आयोपार्जन के विभिन्न आयामों की जानकारी दी गयी। वैज्ञानिकों द्वारा क्षेत्र की पारम्परिक फसलों, पर्वतीय क्षेत्रों में फलों की बागवानी एवं पर्वतीय क्षेत्रों में सब्जियों की पैदावार उपयुक्त तकनीकों पर सामुदायिक रेडियो जनवाणी पन्तनगर से फल एवं सब्जियों को संरक्षित रखने के नये तरीके विषय पर वार्ता दी गयी। वैज्ञानिकों द्वारा अंगीकृत ग्रामों में 34 भ्रमण कार्यक्रमों के अन्तर्गत कृषकों की कृषि सम्बन्धी समस्याओं का समाधान एवं सामयिक जानकारी दी गयी।
- त्रैमास के अन्तर्गत केन्द्र की गतिविधियों की सूचना 09 प्रेस विज्ञप्तियों के माध्यम से विभिन्न समाचार पत्रों दैनिक जागरण, अमर उजाला, उत्तर उजाला तथा शाह टाइम्स में प्रकाशित की गयी।

कृषि विज्ञानकेन्द्र, गैंना एंचोली (पिथौरागढ़)

- ग्रामीण युवाओं हेतु 08 प्रशिक्षण एवं वाह्य प्रसार कार्यकर्ताओं हेतु 02 प्रशिक्षण आयोजित किया गये, जिनसे कुल 17 प्रशिक्षणार्थी

लाभान्वित हुए।

- अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन के अन्तर्गत गेहूँ–4.0 है0, सरसों–2.0 है0, मसूर–3.0 है0, कीवी–0.5 है0, आम–0.5 है0, प्याज–1.0 है0 व गृह विज्ञान में 10 किसानो के यहाँ (श्रम को कम करने के लिए लंबे हैंडल वाला स्प्रिंग ब्रेस) प्रदर्शन लगाये गये।
- केन्द्र के प्रक्षेत्र से कृषकों को उन्नत प्रजाति के विभिन्न सब्जियों व औषधीय पौधें स्थानीय कृषकों को विक्रय किया गया।
- दिनांक 20.01.2026 को 'वैज्ञानिक सलाहकार समिति' की 'इक्कीसवी' बैठक का आयोजन डॉ0 मनमोहन सिंह चौहान, कुलपति, गो.ब. पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पंतनगर की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। इस बैठक में गत वर्ष की प्रगति आख्या एवं वर्ष 2026–27 की कार्ययोजना पर विस्तृत चर्चा की गयी। कार्यक्रम में डॉ0 जितेन्द्र क्वात्रा, निदेशक प्रसार शिक्षा, पंतनगर के विभिन्न वैज्ञानिकगण तथा रेखीय विभागों के अधिकारियों एवं प्रगतिशील किसानों ने प्रतिभाग किया।
- दिनॉक 03.01.2026 व 04.01.2026 को विकसित भारत रोजगार और आजीविका मिशन के लिए गारंटी (ग्रामीण विधेयक–2025) कार्यक्रम का सीधा प्रसारण, दिनॉक 24 जनवरी, 2026 को राष्ट्रीय मतदान दिवस, दिनॉक 17 फरवरी, 2026 को भारत विस्तार कार्यक्रम, दिनॉक 05 मार्च, 2026 को भारत हरित आंदोलन–शिव वृक्ष मित्र कार्यक्रम, दिनॉक 13 मार्च, 2026 को पीएम–किसान सम्मान निधि के 22वें संस्करण का सीधा प्रसारण कार्यक्रम केन्द्र पर कृषकों को सीधा प्रसारण, भूमि सुपोषण अभियान कार्यक्रम आयोजित किये गये।

पॉली हाउस में सब्जी पौध का अवलोकन करते कुलपति जी

- केन्द्र के वैज्ञानिको द्वारा भा.कृ.अ.प., भारतीय पशुचिकित्सा अनुसंधान संस्थान, बरेली में किसान सारथी प्रशिक्षण में प्रतिभाग किया गया।
- अखिल भारतीय किसान मेला व कृषि उद्योग प्रर्दषनी दिनॉक 13 से 16 मार्च, 2026 के अवसर पर जिले के श्री सुन्दर सिंह बिष्ट, ग्राम–डुन्डू विकास खण्ड–कनालीछीना, जनपद–पिथौरागढ़ को प्रगतिशील कृषक के रूप में सम्मानित किया गया।
- टी0एस0पी0 परियोजना ''बकरी पालन के माध्यम से जनजाति समुदायों का सशक्तिकरण एवं सामाजिक–आर्थिक उत्थान'' एवं ''जैविक नियंत्रण आधारित की कीट प्रबन्धन एवं मौन पालन के माध्यम से धारचूला व मुनस्यारी विकासखण्डों में जागरूकता एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये गये।

कृषि विज्ञान केन्द्र, जाखधार (रूद्रप्रयाग)

- वैज्ञानिकों द्वारा तीन प्रथम पंक्ति प्रदर्शन, छः अनुकरणीय परीक्षण तथा छः प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित हुए। इसी क्रम में, अन्य आयोजकों के सहयोग से 10 अन्य प्रशिक्षण भी आयोजित किये गये।
- भारत विस्तार कार्यक्रम का लाइव प्रसारण दिनांकः 17 फरवरी 2026, शिव वृक्ष मित्र दिवस का आयोजन दिनांकः 05 मार्च 2026, अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस दिनांकः 08 मार्च 2026, किसान सम्मान निधि कार्यक्रम का लाइव प्रसारण दिनांकः 13 मार्च 2026, भूमि सुपोषण अभियान जैसे कार्यक्रम आयोजित किये गये।
- केन्द्र के प्रदर्शन इकाई में संरक्षित खेती में टमाटर की हिमसोना, अर्का सम्राट, अर्का रक्षक, शिमला मिर्च की इंदरा, कैलीफोर्निया वण्डर, खीरे की बैली, ब्लैसा तथा क्राप कैफेटेरिया में बैंगन की शामली, नवकिरण, जयंत, ब्रिजेश, पी.पी.एल.–74, मूली की स्पार्कल व्हाइट, मिर्च की गोपी–520, फ्रेंचबीन की फाल्गुनी प्रजातियों को मूल्यांकन एवं प्रदर्शन हेतु लगाया गया है।

बुरांश पुष्प के मूल्यवर्धन सम्बन्धी प्रशिक्षण

- केन्द में कृषकों के लिए एक्सपोजर विजिट का भी आयोजन किया गया, जिसके माध्यम से उन्हें मशरूम उत्पादन, वैज्ञानिक मधुमक्खी पालन, पॉलीहाउस में बेमौसमी सब्जियों का उत्पादन तथा खाद्य संस्करण से संबन्धित जानकारी दी गयी।
- केन्द में शैक्षणिक मशरूम उत्पादन इकाई में ढिंगरी मशरूम का सफलतापूर्वक उत्पादन किया जा रहा है।

कृषि विज्ञान केन्द्र, काशीपुर (ऊधमसिंहनगर)

- ऑन फार्म ट्रायल के अन्तर्गत महिलाओं (15–20 वर्ष) की पोषण स्थिति में सुधार के लिए पोषक अनाज दाल मिश्रण का मूल्यांकन, गन्ने में लाल सड़न रोग के नियंत्रण हेतु पंत बायो–एजेंट का मूल्यांकन, स्वस्थ तालाब वातावरण बनाए रखने के लिए प्रोबायोटिक पूरक का मूल्यांकन, कठिन परिश्रम को कम करने के लिए गोबर संग्राहक का उपयोग इत्यादि के 4.6 है. क्षेत्रफल में 37 परीक्षण संचालित किये जा रहे हैं।
- अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन के अन्तर्गत गेहूं में पीली रतुवा रोग का नियंत्रण, महिलाओं के श्रम को कम करने के लिए लंबे हैंडल वाले स्प्रिंग ब्रेक रेक का प्रदर्शन, मछली उत्पादन बढ़ाने के लिए प्राथमिक उत्पादकता में वृद्धि, विटामिन सप्लीमेंट के माध्यम से मांसपेशियों के विकास में सुधार, महिला आबादी के पोषण स्तर में सुधार के लिए पोषक तत्वों से भरपूर सप्लीमेंट, पोषण वाटिका, जय गोपाल वर्मीकम्पोस्ट, मछली मृत्यु दर से बचने के लिए ऑक्सीजन की गोलियों का उपयोग एवं महिलाओं के लिए सुरक्षात्मक कपड़ों का उपयोग इत्यादि विषयक कुल 22 है. क्षेत्रफल में 90 प्रदर्शन संचालित हो रहे हैं।

प्रक्षेत्र दिवस का आयोजन

- 21वीं वैज्ञानिक सलाहकार समिति की बैठक दिनांक 31.01.2026 को आयोजित की गयी। बैठक में गत वर्ष की प्रगति आख्या तथा आगामी वर्ष की कार्ययोजना पर गहन मंथन हुआ। कार्यक्रम में निदेशक प्रसार शिक्षा, डा. जितेन्द्र क्वात्रा सहित जनपद के विभिन्न रेखीय विभाग के अधिकारियों ने भाग लिया।
- प्रशिक्षण कार्यक्रम के अन्तर्गत केन्द्र द्वारा 12 प्रशिक्षण आयोजित कर लगभग 395 कृषकों को प्रषिक्षित किया गया। जनपद के कृषको हेतु 06 गोष्ठी का आयोजन कर 692 कृषकों को लाभान्वित किया गया।
- प्रक्षेत्र गतिविधियों के अन्तर्गत गेंहू में रसायन छिड़काव, एक्वापोनिक यूनिट प्रदर्शन, बकरी पालन, साहीवाल गाय प्रदर्शन ईकाई, पॉली हॉउस में पौध उत्पादन, टमाटर, बैंगन, मिर्च, खीरा,

लौकी, कद्दू, करेला आदि का उत्पादन कर कृषकों को उपलब्ध कराया गया।

- केन्द्र के वैज्ञानिको द्वारा भा.कृ.अ.प., भारतीय पशुचिकित्सा अनुसंधान संस्थान, बरेली में किसान सारथी प्रशिक्षण में प्रतिभाग किया गया।
- अन्य कार्यक्रम के अन्तर्गत वैज्ञानिकों द्वारा 18 कृषकों के प्रक्षेत्र पर भ्रमण, रेखीय विभाग द्वारा आयोजित कार्यक्रम में आठ व्याख्यान, कृषकोपयोगी 12 समाचार पत्र एवं केन्द्र पर 61 कृषकों का भ्रमण हुआ।
- बजट के बाद कृषि और ग्रामीण परिवर्तन पर वेबिनार, प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि कार्यक्रम का 21वां चरण का सजीव प्रसारण, पूर्व प्रधानमंत्री स्व0 चौधरी चरण सिंह के पुण्यतिथि पर किसान दिवस कार्यक्रम, स्वच्छता कार्यक्रम आदि आयोजित किये गये।

मत्स्य विज्ञान महाविद्यालय की गतिविधियाँ

- महाविद्यालय द्वारा उन्नत मत्स्य उत्पादन एवं मूल्यवर्धन विषय पर 05 प्रशिक्षण आयोजित कराये गये, जिनसे कुल 150 मत्स्य पालक लाभान्वित हुए। ये प्रशिक्षण मत्स्य विभाग, उत्तर प्रदेश एवं उत्तराखण्ड सरकार द्वारा प्रायोजित थे।

सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय की गतिविधियाँ

- महाविद्यालय द्वारा विशेषकर ग्रामीण महिलाओं के क्षमता निर्माण हेतु अनेक प्रशिक्षण यथा् हर्बल गुलाल, धूप बनाना, मशरूम की खेती, उत्पादन प्रक्रिया विपणन, प्राकृतिक रंगाई सम्बन्धी प्रशिक्षण दिये गये। प्रतिभागियों को कृषि उपकरण जैसे स्प्रेयर, गार्डेन रेक, बाल्टी, प्लास्टिक क्रेट, अजोला बेड आदि वितरित किये गये।
- भा.कृ.अ.प.–केंद्रीय महिला कृषि संस्थान भुवनेश्वर के सहयोग से देव भूमि कॉलेज ऑफ एजुकेशन, बनबसा (टनकपुर) में दिनॉक 20.02.2026 को प्रशिक्षण आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में मुख्य विकास अधिकारी, श्री गणेश सिंह खाती ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि इस तरह के प्रशिक्षण ग्रामीण महिलाओं के विकास में महत्वपूर्ण साबित होगा।
- गांधी पार्क, रुद्रपुर में आयोजित "सरस मेला–2026", में "पोषण – पहाड़" विषय के अंतर्गत कार्यक्रम में सक्रिय प्रतिभागिता करायी गयी। कार्यक्रम में वैज्ञानिकों द्वारा मोटे अनाजों की पोषण गुणवत्ता, उनके स्वास्थ्य लाभ, पारंपरिक महत्व तथा सतत् आहार की अवधारणा के विषय में विस्तृत जानकारी प्रदान की गयी।

प्रसार शिक्षा निदेशालय की गतिविधियाँ

समेटी–उत्तराखण्ड द्वारा आयोजित प्रशिक्षण

समेटी–उत्तराखण्ड द्वारा इस अवधि में कुल चार प्रशिक्षण आयोजित किये गये। प्रशिक्षण के मुख्य विषय उन्नत मत्स्य पालन तकनीक, उन्नत पशुपालन एवं दुधारू पशुओं का प्रबन्धन, व्यावसायिक मशरूम उत्पादन एवं पौधशाला प्रबन्धन इत्यादि थे। इसके अलावा समेटी–उत्तराखण्ड एवं प्रसार प्रशिक्षण संस्थान, नीलोखेड़ी, हरियाणा (भारत सरकार) के संयुक्त तत्वाधान में प्रसार अधिकारियों के क्षमता विकास हेतु "प्रौद्योगिकी हस्तांतरण में प्रेरणा एवं संचार की भूमिका" विषयक प्रशिक्षण भी आयोजित किया गया। इन कार्यक्रमों में पशुपालन, मत्स्य पालक, नर्सरी पालक, मशरूम उत्पादक, उद्यान, आतमा के अधिकारी एवं प्रगतिशील कृषक सहित कुल 142 प्रशिक्षणार्थियों ने प्रतिभाग किया।

मशरूम उत्पादन प्रशिक्षण का आयोजन

समेटी–उत्तराखण्ड द्वारा अप्रैल–जून, 2026 में आयोजित होने वाले प्रशिक्षण

क्र.सं.	विषय	दिनांक
1.	उन्नत खरीफ फसलोत्पादन तकनीक	अप्रैल 23–25, 2026
2.	विकसित कृषि तकनीकों के प्रयोग से आर्थिक सशक्तिकरण (ऑनलाईन मोड)	अप्रैल 28–30, 2026
3.	आय वृद्धि हेतु कुक्कुट पालन	मई 20–23, 2026
4.	जैविक खेती– जैविक फसल एवं सब्जी उत्पादन तकनीक	जून 10–13, 2026

कृषि प्रौद्योगिकी सूचना केन्द्र (एटिक)

भ्रमण पर आये 873 कृषकों/आगन्तुकों को एकल खिड़की वितरण प्रणाली के अन्तर्गत विभिन्न गतिविधियों की जानकारी एवं फसलों व सब्जियों के बीज, साहित्य उपलब्ध कराये गये। कृषकों एवं अन्य हितधारकों को ₹ 1,69,645.00 मूल्य के विभिन्न विषयों के कृषि साहित्य/पुस्तक एवं ₹ 3,48,728.00 मूल्य के विभिन्न सब्जियों के 55.53 कुन्तल बीज बीज केन्द्र के विक्रय पटल से उपलब्ध कराये गये। इस अवधि में कृषक हैल्पलाईन/कॉल सेन्टर 05944–234810 के माध्यम से किसानों एवं अन्य हितधारकों द्वारा पूछे गये 47 समस्याओं/जिज्ञासाओं का समाधान विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा किया गया।

कृषक प्रदर्शन इकाई

कृषक भवन एवं प्रशिक्षण केन्द्र (समेटी) के परिसर में रसायन मुक्त

खेती, कृषकों के क्षमता विकास एवं कृषि शिक्षा सम्बन्धी ज्ञानवर्धन हेतु समन्वित कृषि प्रणाली इकाई स्थापित की गयी है। यह यूनिट कृषकों को प्रति इकाई कम कृषि लागत से अधिक आय अर्जन हेतु प्रेरित करती है। वर्तमान में इस प्रदर्शन प्रक्षेत्र पर गोभीवर्गीय सब्जियाँ, चुकन्दर, पालक, मूली, मैथी, ब्रोकली, धनिया, प्याज की नर्सरी इत्यादि के प्रदर्शन संचालित हैं।

प्रशिक्षण एवं भ्रमण इकाई द्वारा आयोजित कार्यक्रम

प्रशिक्षण एवं भ्रमण इकाई द्वारा कुल 20 प्रायोजित प्रशिक्षणों का आयोजन किया गया, जिससे 860 प्रशिक्षणार्थी लाभान्वित हुए। प्रशिक्षण कार्यक्रम के विषय कृषि विविधिकरण, कृषि की नवीनतम तकनीक, पशुपालन प्रबन्धन, जैविक खेती, मसाला एवं सब्जी उत्पादन, मधुमक्खी पालन, रबी फसलोत्पादन इत्यादि से सम्बन्धित थे।

सफलता की कहानी :

प्राकृतिक खेती से सशक्तिकरण

श्री रणजीत सिंह बंगारी रावत, ग्राम–बंगार, विकास खण्ड–जौनपुर, जनपद–टिहरी गढ़वाल के रहने वाले प्रगतिशील कृषक हैं। आपने शुरू में चिकित्सा विभाग एवं शिक्षा विभाग में कार्य किया परन्तु उससे संतुष्ट नहीं हुए। वर्ष 2020–21 में आये कोविड महामारी की विभिषिका ने आपको यह सोचने पर विवश कर दिया कि अध्यापन के बदले कोई ऐसा कार्य किया जाय, जो आय अर्जन का माध्यम बनने के साथ–साथ लोक कल्याणकारी हो। तत्क्रम में आपने गहन विचार कर कृषि के क्षेत्र में ''प्राकृतिक खेती'' करने का निश्चय किया। विषय सम्बन्धी साहित्य का अध्ययन, विभागों से सम्पर्क करते हुए आपने यह विधा अपनी खेती में प्रारम्भ की। प्राकृतिक खेती सम्बन्धी प्रशिक्षण, समेटी पंतनगर से करने के पश्चात् आप इस विधा में और भी पारंगत हुए। वर्तमान में आप प्राकृतिक खेती, बागवानी एवं पशुपालन का कार्य करते हुए न सिर्फ आर्थिकी में बढ़ोत्तरी कर रहे हैं, बल्कि समाज को रसायन रहित खेती करने हेतु प्रेरित भी करते रहते हैं। आपने समेटी पंतनगर द्वारा आयोजित विभिन्न प्रशिक्षणों यथा् प्राकृतिक खेती, जैविक खेती एवं पशुपालन इत्यादि में प्रतिभाग किया। प्रशिक्षण उपरान्त आपको प्राकृतिक खेती हेतु एक सही दिशा मिली। विश्वविद्यालय के प्राकृतिक खेती शोध केन्द्र में भ्रमण के दौरान वहां से सीखे विधाओं को आप अपने खेती में भी प्रयोग करना प्रारम्भ किये। प्राकृतिक खेती में इस्तेमाल होने वाले विभिन्न तरह के प्राकृतिक अस्त्र जैसे नीमास्त्र, बह्मास्त्र, अग्निस्त्र, हर्बल कुनाप जल, दशपर्णी एवं पंचगव्य खुद तो बनाते ही है साथ–साथ अन्य किसानों को भी इसकी जानकारी देते हैं। यदि आमदनी की बात की जाय तो अभी आप महीने में लगभग रू. 30 हजार मासिक कमा रहे हैं जो धीरे–धीरे और बढ़ेगा ऐसा आपका मानना है। स्वामी विवेकानन्द जी की इन पंक्तियों ''चलो प्रकृति की ओर लौट चले'' द्वारा बेरोजगारों के लिए आप एक संदेश दे रहे हैं तथा आपका मानना है कि जिनके पास पर्याप्त संसाधन है वो पशुपालन, प्राकृतिक खेती एवं बागवानी से अपने जीवन को सफल बना सकते हैं।

निदेशक की कलम से

उत्तराखण्ड के पर्वतीय क्षेत्रों में अधिकांश कृषक आज भी पारम्परिक रूप से खेती करते हैं और वे ज्यादातर आधुनिक कृषि के आयामों से अछूते हैं। इसका कारण कृषकों की छोटी व बिखरी जोत का होना, उन्नत कृषि निवेशों का न्यूनतम प्रयोग, सिंचाई का अभाव एवं विकसित कृषि तकनीक का समुचित हस्तान्तरण न होना है। कृषकों तक उन्नत कृषि तकनीकी पहुँचाने में विभिन्न रेखीय विभागों, कृषि विज्ञान केन्द्रों तथा स्वयं सेवी संस्थाओं का अहम योगदान है। कृषकों को उनके क्षेत्र व परिस्थितियों के अनुरूप कम लागत की तकनीक उपलब्ध होने की स्थिति में वे उसका प्रयोग कर अपनी पैदावार में बढ़ोत्तरी व अन्ततः अपनी आर्थिक स्थिति को मजबूत कर सकते हैं। सर्व विदित है कि पर्वतीय क्षेत्रों में छोटे–छोटे सीढ़ीनुमा बिखरे खेत, वर्षा आधारित कृषि, उन्नत कृषि निवेशों का न्यूनतम प्रयोग इत्यादि कुछ ऐसे कारक हैं, जो प्रायः उपज पर प्रतिकूल प्रभाव डालते हैं। इस स्थिति से निपटने हेतु वैज्ञानिक, अधिकारी और प्रसार कार्यकर्ताओं को मिलकर समग्र प्रयास करना होगा। कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा कृषकों के प्रक्षेत्रों पर अग्रिम पंक्ति प्रदर्शनों एवं प्रक्षेत्र परीक्षणों के आयोजन के साथ–साथ विभिन्न प्रसार गतिविधियों का संचालन किया जा रहा है, जो कृषकों हेतु काफी लाभकारी साबित हो रहा है। भारत सरकार के प्रमुख कार्यक्रम यथा् मोटे अनाजों एवं प्राकृतिक खेती को प्रोत्साहित करना, दलहनों एवं तिलहनी फसलों पर क्लस्टर प्रदर्शन जैसे विषयों को भी इन केन्द्रों के माध्यम से बढ़ावा दिया जा रहा है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह पत्रिका कृषकों, रेखीय विभागों के अधिकारियों व प्रसार कार्यकर्ताओं एवं अन्य हितधारकों के लिए मार्गदर्शक की भूमिका निभाएगा। इस पत्रिका के प्रकाशन के लिए सम्पादक डा. बी.डी. सिंह, प्राध्यापक द्वारा किये गये अथक प्रयास हेतु मैं उन्हें बधाई देता हूँ।

(डा० जितेन्द्र क्वात्रा)
निदेशक, प्रसार शिक्षा एवं समेटी–उत्तराखण्ड

आभार

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद से अब तक देश में खाद्यान्न उत्पादन में कई गुना बढ़ोत्तरी हुई है, जिसमें किसानों, नीति नियंताओं व कृषि वैज्ञानिकों का अहम योगदान रहा है। किन्तु खेती में यह तरक्की सिंचित क्षेत्रों में एवं बड़े कृषकों तक अधिक रही है। देश के अधिकांश सीमांत व लघु कृषक आज भी इस विकास से अछूते हैं, जिसके अनेक कारण जैसे कृषकों में तकनीकी जानकारी व जागरूकता का अभाव, परम्परागत खेती, महंगे कृषि निवेश, समुचित बाजार व्यवस्था का अभाव आदि प्रमुख हैं। इसके विपरीत अनेक ऐसे भी कृषक है जो आधुनिक कृषि को व्यवसाय के रूप में अपनाकर अच्छी आय अर्जित करने के साथ–साथ अन्य कृषकों हेतु प्रेरणा स्त्रोत बनकर उभर रहे हैं। वर्तमान परिस्थितियों में आवश्यकता इस बात की है कि कृषकों एवं बेरोजगार युवाओं को अधिकाधिक संख्या में कृषि एवं कृषि आधारित व्यवसायों हेतु प्रेरित किया जाये। इस कार्य में कृषि विज्ञान केन्द्रों के वैज्ञानिक व रेखीय विभागों के प्रसार कर्मी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। ''पंत प्रसार संदेश'' का वर्तमान अंक आपके हाथों में है जिसमें विभिन्न प्रसार गतिविधियों के साथ–साथ आगामी त्रैमास में किये जाने वाले महत्वपूर्ण कृषि कार्यों की जानकारी भी दी गयी है। इस पत्रिका को तैयार करने में डा. जितेन्द्र क्वात्रा, निदेशक प्रसार शिक्षा द्वारा दिये गये मार्गदर्शन एवं परामर्श हेतु उनका आभार व्यक्त करता हूँ। सभी कृषि विज्ञान केन्द्रों के प्रभारी अधिकारियों एवं वैज्ञानिकों तथा मुख्यालय के वैज्ञानिकों के सहयोग हेतु भी मैं आभारी हूँ। पत्रिका को और बेहतर बनाने में आपके सुझाव महत्वपूर्ण होंगे। आप अपने सुझाव पत्रिका के अन्तिम पेज पर अंकित फोन नं. अथवा ई–मेल आई.डी. पर प्रेषित कर सकते हैं।

(डा० बी.डी. सिंह)
प्राध्यापक (सस्य विज्ञान)

प्रसार शिक्षा निदेशालय, गो.ब. पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पंतनगर (ऊधम सिंह नगर), उत्तराखण्ड
दूरभाष : 05944-233336, 233811, ई–मेल : dirextedugbp@gmail.com
हेल्प लाइन : 05944-234810
संरक्षक : डॉ० मनमोहन सिंह चौहान, कुलपति; मुख्य सम्पादक : डॉ० जितेन्द्र क्वात्रा, निदेशक, प्रसार शिक्षा एवं समेटी
सम्पादक : डॉ० बी.डी. सिंह, प्राध्यापक (सस्य विज्ञान)